सन्तान-सुख-प्राप्ति के प्रयोग

सन्तान का अभाव दूर करने एवं संस्कारी सन्तान-प्राप्ति हेतु अनुभूत मन्त्रादि प्रयोग

षष्ठी देवी का प्रयोग

पुत्र-दायक-प्रयोग

विवाह के प्रयोग

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-६ ☎ ०५३२-२५०२७८३

सन्तान-सुख प्राप्ति
के
प्रयोग

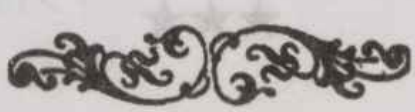

सन्तान का अभाव दूर करने
एवं
संस्कारी सन्तान-प्राप्ति
हेतु
अनुभूत मन्त्रादि प्रयोग

सम्पादक
'कुलभूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग-राज-२११००६

(पृष्ठ ३२ का शेषांश)

प्रसादं कुरु मे नाथ ! मङ्गल-प्रद मङ्गल!
मेष-वाहन! रुद्रात्मन् ! पुत्रान् देहि धनं यशः ।।

इस प्रकार एक वर्ष तक मङ्गल-देव की स्तुति करे और समय-समय पर लाल वस्त्रादि वस्तुएँ सुपात्र को दान देती रहे, तो वह स्त्री चिरंजीवी पुत्रों की माता होती है और धन तथा यश से भी सम्पन्न होती है।

★★★

(पाठान्तर, पृष्ठ १०)

'विवाह के प्रयोग', पृष्ठ १० पर प्रकाशित 'ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्वो० ' श्लोक का दूसरा रूप निम्न प्रकार भी प्रचलित है-

ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्वो, कन्यानामधिपतिः ।
सुरूपां सालङ्कारां कन्यां, देहि मे नमस्तस्मै ।।
विश्वावसवे स्वाहा ।।

चतुर्थ संस्करण
कार्तिक पूर्णिमा, २०६३ वि०- ५नवम्बर, २००६

मूल्य : ६.०० रु०

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
परा वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-०६

अ-नु-क्र-म

१ परिचय ५

२ सन्तान-सुख की प्राप्ति ८

३ विवाह के प्रयोग १०

पत्नी-प्राप्ति के प्रयोग १०

पति-प्राप्ति के प्रयोग ११

४ गर्भाधान-संस्कार १३

५ पुत्र-प्राप्ति के प्रयोग १५

१–षष्ठी देवी का प्रयोग १५

२–पुत्र-प्रद अभिलाषाष्टकं २१

३–द्वादशाक्षर मन्त्र-प्रयोग २४

४–पुत्र-दायक यन्त्र २५

५–वसु-प्रद श्रीकृष्ण-मन्त्र २५

६–सन्तान-गोपाल मन्त्र २६

७–चिर-जीवी पुत्र-प्राप्ति का यन्त्र २८

८–पुत्रदा श्रावण शुक्ला एकादशी २९

९–श्रीदुर्गा सप्तशती का प्रयोग ३०

१०–बीजात्मक सन्तान-गोपाल मन्त्र ३०

११–पुत्र-दायक मङ्गल-व्रत ३२

विशेष निवेदन

'मन्त्र' के प्रयोग से व्यक्ति अपनी सभी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि किसी अनुभवी, सज्जन, उदार गुरुदेव से उस 'मन्त्र' का उपदेश प्राप्त कर उनके आशीर्वाद के साथ उस मन्त्र का प्रयोग किया जाय।

प्रस्तुत पुस्तक में सभी 'मन्त्र' अनुभूत हैं। बहु-संख्यक लोगों ने इनका प्रयोग कर अपने अभीष्ट को प्राप्त किया है। अनुरोध है कि जो बन्धु जिस प्रयोग से लाभ उठावें, उसकी सूचना हमें भी देने की कृपा करें। यदि किसी 'मन्त्र' के प्रयोग के विषय में कोई और जानकारी प्राप्त करना चाहें, तो वह भी हमसे प्राप्त की जा सकती है।

शुभ कामनाओं सहित—

आश्विन प्रतिपदा, २०४७ प्रकाशक

परिचय

सन्तान की कामना मनुष्य की आत्मा की पुकार है। कहा भी है–**'आत्मा वै जायते पुत्रः'** अर्थात् अपनी आत्मा ही पुत्र-रूप में जन्म लेती है। यही कारण है कि जब तक पुरुष **'पिता'** नहीं बनता और स्त्री **'माता'** नहीं कहलाती, तब तक दोनों ही अपने में एक प्रकार की तीव्र अपूर्णता का अनुभव करते रहते हैं और उसकी पूर्ति तभी हो पाती है, जब उन्हें 'सन्तान' का मुख देखने का परम सुख मिलता है। ऐसी दशा में सन्तान का अभाव होना सांसारिक जीवन में बड़ा ही सन्ताप-दायक होता है। **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष**–इस **'पुरुषार्थ-चतुष्टय'** की पूर्ण सफलता भी तभी सम्भव है, जब व्यक्ति सन्तान से सम्पन्न होता है।

परमात्मा की प्रथम इच्छा यही मानी गई है कि **'मैं एक हूँ–एक से अनेक होऊँ'** और इस इच्छा के फल-स्वरूप ही सृष्टि-कार्य का श्रीगणेश हुआ। अतः सन्तानोत्पत्ति-द्वारा परमात्मा के उक्त महत्-कार्य से सहयोग करना यदि मनुष्य का पहला धर्म कहा जाता है, तो यह ठीक ही है। यदि कोई व्यक्ति सन्तान-हीन है, तो वह अपना प्रथम ही धर्म-पालन करने में असमर्थ ठहरता है। साथ ही व्यक्ति की अवस्था जैसे-जैसे अधिक होती जाती है, वह उतना परिश्रम-शील नहीं रह जाता। इसके अतिरिक्त धार्मिक अनुष्ठानों में अनेक सहायकों की आवश्यकता पड़ती है–ऐसे सहायकों की, जो हृदय से सहयोग करें।

ऐसे सहायकों में 'सन्तान' का स्थान निश्चय ही मुख्य होता है, क्योंकि वह स्वभावतः अपने माता-पिता की सच्ची आज्ञा-पालिका होती है। होश सँभालते ही वह माता-पिता की सहायता करने लगती है और योग्य बनकर अर्थोपार्जन में भी सहायिका बनती है। इसी प्रकार व्यक्ति की विविध कामनाओं की

पूर्ति करने का बीड़ा भी सोत्साह वही उठाती है। स्पष्ट है कि **'धर्म', 'अर्थ'** और **'काम'** का सम्पादन सन्तान के माध्यम से ही व्यक्ति सुचारु रूप से कर पाता है। रहा **'मोक्ष'**, तो हिन्दू-धर्म के अनुसार पुत्र-हीन व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त होना दूर रहा, उसे 'पुं' नामक नर्क में जाकर अपनी कर्तव्य-च्युति के लिए प्रायश्चित्त करना पड़ता है।

सारांश यह है कि सन्तान-प्राप्ति के लिए व्यक्ति का सचेष्ट होना उसके लिए स्वाभाविक ही नहीं है; अपितु उसका पवित्र कर्तव्य भी है। इस कर्तव्य का पालन करने में अनेक प्रकार की जो बाधाएँ सामने आती हैं, उन्हें हम संक्षेप में तीन श्रेणियों में बाँट सकते हैं—

१ दुर्भाग्य, २ मानसिक दुर्बलता, ३ दैहिक हीनता

प्रथम और प्रमुख बाधा दुर्भाग्य की होती है, अर्थात् **'ग्रह-दशा'** ऐसी होती है कि सन्तान का मुख देखने को न मिले। इस परिस्थिति में प्रायः यह देखने में आता है कि पहले तो विवाह नहीं हो पाता और यदि विवाह हो भी गया, तो वर्ष-पर-वर्ष बीतते चले जाते हैं और पति-पत्नी दोनों **'ग्रह-दशा'** के कारण सन्तान-सुख से वञ्चित ही बने रहते हैं। कभी **'दैवी प्रकोप'** से, तो कभी **'भूत-प्रेतादि-बाधा'** के कारण भी यह दुर्भाग्य व्यक्तियों को भोगना पड़ता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि ज्योतिष-शास्त्र की सहायता से विवाह न होने या सन्तान के अभाव का कारण मालूम किया जाय और तब विपरीत ग्रहों की शान्ति के उपाय करते हुए मन्त्रादि का प्रयोग करे।

यहाँ पर उल्लेखनीय है कि अन्य दो बाधाओं—**'मानसिक दुर्बलता'** और **'दैहिक हीनता'**—के मूल में भी दुर्भाग्य ही निहित

रहता है और इसका सङ्केत व्यक्ति की ग्रह - दशा से मिल जाता है।

'मानसिक दुर्बलता' से यह आशय है कि या तो व्यक्ति विवाह करना ही नहीं चाहता—'बाल - ब्रह्मचारी' का व्रत निभाने को तत्पर रहता है और यदि विवाह करता है, तो मात्र जीवन-निर्वाह हेतु, 'सन्तान' को झंझट मानकर उसकी उत्पत्ति से दूर ही रहता है। इस स्थिति में व्यक्ति के अभिभावकों या इष्ट-मित्रों का कर्तव्य होता है कि उसके मानसिक विचारों में परिवर्तन लाने के लिए उसे समझाएँ-बुझाएँ, साथ ही उसके कल्याण हेतु आवश्यक मन्त्र-प्रयोग करें, क्योंकि वह स्वयं तो ग्रह-दशा के दुष्प्रभाव से विरक्त या पथ-भ्रष्ट होने के कारण कुछ करने से रहा।

इसी प्रकार **'दैहिक हीनता'** से ग्रस्त व्यक्ति नपुंसक होते हैं, या वीर्य-सम्बन्धी किसी रोग से पीड़ित रहते हैं, जिसके कारण उन्हें विवाह के प्रति उत्साह नहीं रहता और यदि विवाह हो भी गया, तो सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ रहते हैं। इस स्थिति में व्यक्ति को औषधोपचार करते हुए मन्त्र-प्रयोग करना चाहिए।

उक्त बातों को ध्यान में रख कर प्रयत्न-शील होने से व्यक्ति निस्सन्देह सन्तान-वान् हो सकता है। जहाँ तक ग्रह-दशा और औषधोपचार का सम्बन्ध है, व्यक्ति को चाहिए कि किसी योग्य ज्योतिषी और अनुभवी वैद्य [चिकित्सक] से परामर्श करे। रहे मन्त्रादि के प्रयोग, वे आगे के पृष्ठों में सङ्कलित किए गए हैं। इन प्रयोगों में से अधिकांश अनुभूत हैं। कितने ही उनका प्रयोग कर आज सन्तान-वान् होकर अपना जीवन सुख-पूर्वक बिता रहे हैं।

सन्तान-सुख की प्राप्ति

सन्तान का उत्पन्न होना एक बात है और उस सुख की प्राप्ति होना दूसरी बात है। एक कहावत है कि 'हजार कुपूतों से एक सपूत अच्छा होता है।' कुछ लोगों का मानना है कि अधिक सन्तानों के उत्पन्न होने से माता-पिता उनकी देख-भाल समुचित ढङ्ग से नहीं कर पाते और वे अयोग्य निकल जाती हैं, जिससे सुख के स्थान पर दुःख ही उनसे मिलता है। इसके साथ ही यह भी विचारणीय है कि एक ही दो या कम सन्तान होने पर स्वभावतः उसका लाड़-प्यार अधिक होता है और उसके दुःख-दायी होने की सम्भावना बनी रहती है। कभी-कभी ऐसा भी संयोग बनते देखा गया है कि सन्तान की देख-भाल उचित ढङ्ग से होने के बाद भी माता-पिता को उसका सुख नहीं मिलता। इन सब बातों का यही परिणाम निकलता है कि सन्तान-लाभ होने से यह आशा नहीं कर लेनी चाहिए कि उससे सुख ही मिलेगा। **'सन्तान-सुख की प्राप्ति'** के लिए तो माता-पिता को प्रारम्भ से ही सचेत रहना चाहिए। तभी उनके अभीष्ट की सिद्धि हो सकती है।

हिन्दू-धर्म में इसी उद्देश्य से **'गर्भाधान संस्कार'** का आयोजन रखा गया है। इस संस्कार को ध्यान में रखने से दम्पति के हृदय में प्रारम्भ से पवित्रता-पूर्ण यह भावना पुष्ट होती रहती है कि सन्तानोत्पत्ति जैसे महत्त्व-पूर्ण उत्तर-दायित्व का भार उन पर है। फलतः वे अपनी सन्तान के प्रति आवश्यक कर्तव्य करने के लिए आदि से ही जागरूक रहते हैं। **पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जात-कर्म, नाम-करण, अन्न-प्राशन, चूड़ा-कर्म, कर्ण-वेध, उपनयन** आदि संस्कारों को जो माता-पिता विधि-वत् सम्पन्न करते-करवाते हैं, उन्हें **'सन्तान-सुख की प्राप्ति'** अवश्य ही होती है, क्योंकि उनकी मूल-भावना धर्म से ओत-प्रोत रहती है।

यह एक साधारण समझ की बात है कि धार्मिक भावना के साथ किए जानेवाले कार्य का परिणाम अन्त में कल्याण-कारी ही होता है और जो कार्य अधार्मिक वासनात्मक भावना के साथ सम्पन्न होते हैं, उनका फल भी वैसा ही होता है। जो दम्पत्ति मात्र अपनी वासना के लिए सन्तानोत्पत्ति के कार्य में प्रवृत्त होते हैं, उनकी 'सन्तान' यदि वासना-प्रधान बुद्धिवाली हो और अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य-परायण न हो, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है, यह तो स्वाभाविक ही है। दूसरी ओर जो व्यक्ति धर्म-निष्ठ रहते हुए निर्दिष्ट संस्कारों को ध्यान में रखते हैं, वे सन्तानोत्पत्ति के कार्य को भी एक पवित्र कर्तव्य के रूप में मानते हैं; पति पत्नी को सह-धर्मिणी मानता है और पत्नी पति को अपने सर्वस्व-रूप में ग्रहण करती है। इस भावना के फल-स्वरूप आस्तिक बुद्धिवाली 'सन्तान' उत्पन्न होती है, जो माता-पिता आदि अपन सभी गुरु-जनों के प्रति कर्तव्य-निष्ठ होती है। फलतः उससे सभी को सुख मिलता है।

कलियुग में धार्मिक भावना का नितान्त अभाव होने से उक्त संस्कारों की ओर विरले ही लोगों का ध्यान जाता है। अधिकांश आस्तिक लोग भी 'संस्कार' के महत्त्व को न समझ कर जैसे-तैसे उसकी पूर्ति भर कर देते हैं। विधि-वत् उसे सम्पन्न नहीं करते-करवाते। इससे उसका प्रभाव भी उसी मात्रा में पड़ता है और उनकी भी सन्तानें उनके अनुकूल आचरण कम ही करती हैं, जिससे वे **'सन्तान-सुख'** से वञ्चित रह जाते हैं। इस परिस्थिति में भी धर्माचरण ही एक-मात्र उपाय रहता है और आगे के पृष्ठों में उल्लिखित मन्त्रादि प्रयोगों के द्वारा ऐसे लोग अपना कल्याण-साधन कर सकते हैं।

विवाह के प्रयोग

पत्नी-प्राप्ति के प्रयोग

[१]

सन्तान-सुख की प्राप्ति के लिए विवाह होना आवश्यक है। यदि किन्हीं कारणों से किसी युवक का विवाह न हो रहा हो, तो उसे निम्न मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए—

प्रति-दिन प्रातः-काल स्नानादि करके जल की सात अञ्जलियाँ श्री विश्वावसु गन्धर्व के प्रति अर्पित कर निम्नलिखित मन्त्र की एक माला [१०८ बार] मन-ही-मन जप करे—

ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्वो, कन्यानामधिपतिः ।
सुरूपां सालंकृतां कन्यां, देहि मे नमस्तस्मै ।।
विश्वावसवे स्वाहा ।।

इसी प्रकार सायं-काल भी स्नानादि कर चुकने पर मन्त्र का जप करे। यह ध्यान रहे कि किसी को यह न मालूम होने पाए कि विवाह के उद्देश्य से जप किया जा रहा है, अर्थात् जप के इस अनुष्ठान को गुप्त रखे।

इस विधि से उक्त मन्त्र का नियमित रूप से अर्थात् निर्दिष्ट समय पर प्रति-दिन निर्दिष्ट संख्या में जप करने से एक महीने के भीतर निश्चित रूप से विवाह-सम्बन्ध स्थिर हो जाता है और सुन्दर तथा सम्पन्न पत्नी प्राप्त होती है। यथा—

पानीयस्याञ्जलीन् सप्त, दत्वा विद्यामिमां जपेत् ।
सालङ्कारां वरां कन्यां, लभते मास-मात्रतः ।।

[२]

श्री दुर्गा सप्तशती के अर्गला स्तोत्र के **'जयन्ती मङ्गला काली'** से लेकर—

पत्नीं मनोरमां देहि, मनो-वृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्ग-संसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ।।

इस चौबीसवें श्लोक तक नित्य मानसिक सङ्कल्प-पूर्वक पाठ करने से या केवल इसी श्लोक को मन्त्र-रूप में प्रतिदिन १०८ बार जप करने से अवश्य सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति होती है।

पति-प्राप्ति के प्रयोग

[१]

यदि किसी कन्या के विवाह में अड़चन हो, तो उसे चाहिए कि वह स्नान कर पवित्र वस्त्र पहन कर प्रातः-काल तथा सायं-काल दोनों समय निम्न मन्त्र का जप किया करे—

कात्यायनि ! महा-माये ! महा-योगिन्यधीश्वरि !
नन्द - गोप - सुतं देवि ! पतिं मे कुरुते नमः ।।

उक्त मन्त्र का कम-से-कम एक माला (१०८ बार) जप करे। प्रति **शुक्रवार** को **माता गौरी** (पार्वती) का गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करे और एक, तीन या पाँच ब्राह्मणों को अथवा छोटी कन्याओं को सादर बुलाकर उनका पूजन कर भोजन कराए तथा उन्हें दक्षिणा दे। यदि प्रति शुक्रवार को ऐसा न कर सके, तो महीने में एक बार किसी शुक्रवार के दिन ऐसा करे, किन्तु **गौरी माता** का पूजन प्रति **शुक्रवार** को करती रहे।

इस विधान का भक्ति पूर्वक पालन करने से कन्या को निस्सन्देह योग्य और सुन्दर वर प्राप्त होता है।

[२]

श्री दुर्गा सप्तशती के अर्गला-स्तोत्र के २४वें श्लोक अर्थात् **'पत्नीं मनोरमां देहि'** इत्यादि के स्थान पर निम्न श्लोक की योजना कर पूरे स्तव का नित्य पाठ करे—

पतिं मनोरमं देहि, मनो - वृत्तानुसारकः ।
तारकं दुर्ग-संसार-सागरस्य कुलोद्भवम् ।।

इस प्रकार का पाठ करने से कुछ ही दिनों में उपयुक्त पति की प्राप्ति होती है । अथवा केवल उक्त श्लोक का ही मन्त्र-रूप में प्रतिदिन १०८ बार जप करे, तो शीघ्र ही योग्य वर पति-रूप में सुलभ हो जाता है ।

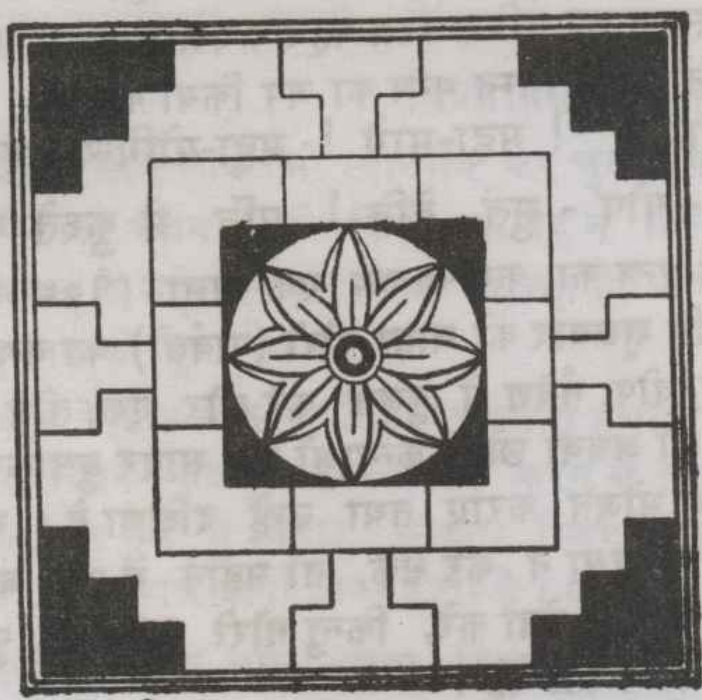

गर्भाधान-संस्कार

जैसा कि 'सन्तान-सुख की प्राप्ति' शीर्षक अध्याय में बताया जा चुका है, हिन्दू-धर्म में 'गर्भाधान-संस्कार' का आयोजन इस उद्देश्य से रखा गया है कि नव-दम्पति में सन्तानोत्पत्ति के अपने दायित्व के प्रति कर्तव्य की भावना जाग्रत् हो। उसे वे केवल वासना-पूर्ति का माध्यम न समझें। अतः यहाँ उक्त संस्कार की विधि देना आवश्यक है। इस विधि का महत्त्व पहले लिखा जा चुका है।

ऋतु-स्नान के बाद (गणेश-पूजन, स्वस्ति - वाचन, पुण्याह-वाचन, षोडश-मातृका-पूजन, नान्दी-श्राद्ध और वृद्धि-श्राद्ध) कर्म चुकने पर पति-पत्नी दोनों—

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्व-रूपम्। परिवृङ्धि हरसा माऽभि म ँ स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥

यह मन्त्र पढ़कर सूर्य का दर्शन तथा नमस्कार करें।

इसके बाद सायं-सन्ध्या तथा भोजन कर चुकने तथा एक पहर रात बीत जाने पर पति-पत्नी शुद्ध वस्त्र पहन कर शयनागार में जायँ। वहाँ पत्नी के पूर्व की ओर सिर करके लेट जाने पर पति उत्तर की ओर मुँह करके बैठे। फिर वह पत्नी के नाभि-देश पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पूषा भगं सविता मे ददातु, रुद्रः कल्पयतु

ललामगुम् । ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु, त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं ददातु ते ।

इसके बाद पति पूर्व की ओर मुँह करके बैठे और पत्नी की ओर देखते हुए निम्न मन्त्र को पढ़े—

ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि, गर्भं धेहि सरस्वति ! गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर-स्रजौ । तेजो वैश्वानरो दद्यादथ ब्रह्माऽनु-मन्त्रयेत् । ब्रह्मा गर्भं दधातु ते ।

तदनन्तर निम्न-लिखित मन्त्र पढ़े—

ॐ गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि ।

ॐ रेतो मूत्रं विजहाति, योनिं प्रविशदिन्द्रियं गर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति, जन्मना ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ॐ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा ।।

तदनन्तर पति-धर्म करे । उसके बाद निम्न - लिखित मन्त्र पढ़े--

ॐ यत्ते सु-सीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद् विद्यात् ।। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतम् ।

इस मन्त्र को पढ़कर बैठी हुई पत्नी के हृदय-देश का स्पर्श करे और ऐसा ही स-मन्त्र स्पर्श प्रत्येक ऋतु-समागम में करे ।

पुत्र-प्राप्ति के प्रयोग

१—षष्ठी देवी का प्रयोग

'पुत्र' की कामना से किए जानेवाले प्रयोगों में सर्वाधिक लोक-प्रिय प्रयोग है **'षष्ठी देवी'** का। यह प्रयोग श्रीमद्देवी-भागवत के नवम स्कन्ध में नारद-नारायण-सम्वाद के अन्तर्गत दिया हुआ है। कितने ही पुत्र-हीन व्यक्तियों ने इस प्रयोग को करके पुत्र-लाभ किया है। अतएव इस अनुभूत प्रयोग को सबसे पहले दिया जा रहा है।

पुत्राभिलाषी व्यक्ति शालग्राम की शिला या घट या वट-वृक्ष के मूल या घर की दीवार पर **'षष्ठी देवी'** की मूर्ति ध्यान के अनुसार चित्रित करे। फिर निम्न प्रकार से ध्यान करते हुए मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे। जप की समाप्ति के बाद स्तोत्र का पाठ करे।

इस प्रकार एक वर्ष तक **'षष्ठी देवी'** की पूजा करने से पुत्र की अवश्य प्राप्ति होती है, इसमें सन्देह नहीं। **षष्ठी देवी** का ध्यान, मन्त्र और स्तोत्र इस प्रकार है—

॥ ध्यान ॥

श्वेत-चम्पक-वर्णाभां, रत्न-भूषण-भूषिताम्।
पवित्र-रूपां परमां, देव - सेनां परां भजे ॥

॥ मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं षष्ठी-देव्यै स्वाहा।

इसकी जप-संख्या एक लाख है। यथा-शक्ति प्रति-दिन एक निश्चित संख्या में जप करे। एक लाख जप हो जाने पर नियम-

पूर्वक उसका दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश हवन और हवन का दशांश ब्राह्मण या कुमारी कन्या को भोजन कराए। मन्त्र-जप के बाद प्रति - दिन स्तोत्र और कथा का पाठ करे।

॥ स्तोत्र ॥

॥ नारायण उवाच ॥

स्तोत्रं शृणु मुनि - श्रेष्ठ ! सर्व-काम-शुभावहम् ।
वाञ्छा - प्रदं च सर्वेषां, गूढं वेदेषु नारद ! ॥
नमो देव्यै महा-देव्यै, सिद्ध्यै शान्त्यै नमो नमः ।
शुभायै देव - सेनायै, षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥
वरदायै पुत्रदायै, धनदायै नमो नमः ।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥
षष्ठ्यै षष्ठांश - रूपायै, सिद्धायै च नमो नमः ।
मायायै सिद्ध-योगिन्यै, षष्ठी - देव्यै नमो नमः ॥
सारायै शारदायै च, परा - देव्यै नमो नमः ।
बालाधिष्ठातृ - देव्यै च, षष्ठी-देव्यै नमो नमः ॥
कल्याणदायै कल्याण्यै, फलदायै च कर्मणाम् ।
प्रत्यक्षायै स्व - भक्तानां, षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥
पूज्यायै स्कन्द - कान्तायै, सर्वेषां सर्व - कर्मसु ।
देव - रक्षण - कारिण्यै, षष्ठी - देव्यै नमो नमः ॥
सिद्ध - सत्त्व - स्वरूपायै, वन्दितायै नृणां सदा ।
हिंसा-क्रोध - वर्जितायै, षष्ठी - देव्यै नमो नमः ॥

धनं देहि प्रियां देहि, पुत्रं देहि सुरेश्वरि !
मानं देहि जयं देहि, द्विषो जहि महेश्वरि ! ॥
धर्मं देहि यशो देहि, षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ।
देहि भूमिं प्रजां देहि, विद्यां देहि सु - पूजिते ! ॥
कल्याणं च जयं देहि, षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ।

॥ फल-श्रुति ॥

इति देवीं च संस्तूय, लेभे पुत्रं प्रिय - व्रतः ।
यशस्विनं च राजेन्द्रः, षष्ठी - देव्याः प्रसादतः ॥
षष्ठी-स्तोत्रमिदं ब्रह्मन् ! यः शृणोति तु वत्सरम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं, वरं सुचिर - जीवनम् ॥
वर्षमेकं च यो भक्त्या, सम्पूज्येदं शृणोति ।
सर्व - पापाद् विनिर्मुक्तो, महा - वन्ध्या प्रसूयते ॥
वीरं पुत्रं सु - गुणिनं, विद्या - वन्तं यशस्विनम् ।
सु-चिरायुष्य - वन्तं च, सूते देवी - प्रसादतः ॥
काक-वन्ध्या च या नारी, मृत-वत्सा च या भवेत् ।
वर्षं श्रुत्वा लभेत् पुत्रं, षष्ठी - देवी - प्रसादतः ॥
रोग-युक्ते च बाले च, पिता माता शृणोति चेत् ।
मासेन मुच्यते बालः, षष्ठी - देव्याः प्रसादतः ॥

॥इति श्रीमद्देवी-भागवते नारद-नारायण-सम्वादे षष्ठी-स्तोत्रम्॥

षष्ठी देवी की कथा

(श्रीमद्-देवी-भागवत, नवम-स्कन्ध, अध्याय ४६)

श्री नारद जी ने भगवान् नारायण से कहा—हे प्रभो ! भगवती षष्ठी मूल प्रकृति की कला हैं । मैं इनके अवतार की कथा सुनना चाहता हूँ ।

भगवान् नारायण ने कहा—हे मुने ! मूल प्रकृति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण ये **'षष्ठी देवी'** कहलाती हैं; बालकों की ये अधिष्ठात्री देवी हैं—इन्हें **'विष्णु - माया'** और **'बालदा'** भी कहा जाता है । मातृकाओं में ये **'देव-सेना'** नाम से प्रसिद्ध हैं । इन देवी को स्वामि कार्तिकेय की पत्नी होने का सौभाग्य प्राप्त है । बालकों को दीर्घायु बनाना और उनका पालन-पोषण तथा रक्षण करना इनका स्वभाव है । ये सिद्ध योगिनी देवी अपने योग के प्रभाव से बच्चों के पास सदा विराजमान रहती हैं । हे ब्रह्मन् ! इनका उत्तम इतिहास सुनो । पुत्र प्रदान करनेवाला यह उपाख्यान मैंने धर्म-देव से सुना है ।

प्रिय-व्रत नाम के एक राजा थे । उनके पिता का नाम था—स्वायम्भुव मनु । प्रिय-व्रत योगी थे, अतः विवाह नहीं करना चाहते थे । तपस्या में उनकी विशेष रुचि थी, किन्तु ब्रह्मा जी की आज्ञा से उन्होंने विवाह कर लिया । विवाह के बाद बहुत समय तक उन्हें जब सन्तान नहीं हुई, तब महर्षि कश्यप ने उनसे पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाया । राजा की प्रिय पत्नी का नाम था मालिनी । यज्ञ के बाद मुनि ने उन्हें यज्ञ का प्रसाद 'चरु' खाने को दिया । उसके खाने के बाद रानी मालिनी गर्भवती हुईं । उस गर्भ को दिव्य बारह वर्षों तक अपनी कोख में धारण किए रहीं । तब सुवर्ण के समान तेजस्वी एक पुत्र का जन्म हुआ, परन्तु सम्पूर्ण अङ्गों से सम्पन्न वह कुमार मरा हुआ था । उसकी आँखें उलट चुकी थीं । उसे देखकर सारी नारियाँ और कुटुम्बी-जन रो उठे । मरे हुए पुत्र के असह्य शोक के कारण माता मूर्छित हो गईं ।

हे मुने ! राजा प्रिय-व्रत उस मरे हुए पुत्र को लेकर श्मशान में गए और उस एकान्त भूमि में पुत्र को छाती से लगाकर

आँखों से आँसू बहाने लगे। उस मरे पुत्र को त्यागे बिना ही राजा स्वयं भी मरने को तैयार हो गए क्योंकि घोर पुत्र-शोक के कारण उन्हें कोई ज्ञान नहीं रह गया था।

इसी समय वहाँ एक दिव्य विमान दिखाई पड़ा। स्फटिक मणि के समान चमकता हुआ वह विमान मूल्यवान रत्नों से जड़ा हुआ था। उसी पर विराजमान एक अत्यन्त सुन्दर देवी के दर्शन राजा प्रिय-व्रत ने किए।

श्वेत चम्पक पुष्प के समान उन देवी का वर्ण उज्ज्वल था। सदा स्थिर तरुणाई से शोभा पानेवाली वे देवी मुस्करा रही थीं। उनके मुख पर प्रसन्नता छाई हुई थी। रत्न - मय आभूषणों से उनकी बड़ी शोभा थी। ऐसा जान पड़ता था कि वे मानों मूर्ति-मयी कृपा ही हों।

उन देवी को सामने विराजमान देखकर राजा ने बालक को भूमि पर रख दिया और बड़े भक्ति - भाव के साथ उनकी पूजा और स्तुति की। हे नारद! उस समय स्कन्द की प्रिय देवी षष्ठी अपने तेज से देदोप्यमान थीं। उनका शान्त - विग्रह सूर्य के समान चमचमा रहा था। उन्हें प्रसन्न देखकर राजा प्रिय-व्रत ने पूछा—हे देवी, आप कौन हैं?

भगवती ने कहा—हे राजन्! मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूँ। जगत् पर शासन करनेवाली मुझ देवी का नाम 'देव-सेना' है। मैं सम्पूर्ण मातृकाओं में प्रसिद्ध हूँ। भगवती मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण विश्व में **'षष्ठी देवी'** नाम से मेरी प्रसिद्धि है। मेरे प्रसाद से पुत्र - हीन व्यक्ति सुयोग्य पुत्र, प्रिया-हीन जन प्रिय पत्नी, दरिद्री धन तथा कर्म - शील पुरुष कर्मों में उत्तम फल प्राप्त करते हैं। अपने ही कर्म के प्रभाव से पुरुष अनेक पुत्रों का पिता होता है और कुछ लोग पुत्र-हीन भी

होते हैं। किसी को मरा हुआ पुत्र होता है और किसी को दीर्घ-जीवी। यह सब कर्म का ही फल है।

हे मुने ! इस प्रकार कहकर **'षष्ठी देवी'** ने उस बालक को उठा लिया और अपने प्रभाव से उसे पुनः जीवित कर दिया। देवी देव-सेना उस बालक को लेकर आकाश में जाने को तैयार हो गईं। उन्होंने राजा से कहा—तुम स्वायम्भुव मनु के पुत्र हो। त्रि - लोक में तुम्हारा शासन चलता है। तुम सर्वत्र मेरी पूजा कराओ और स्वयं भी करो। तब मैं तुम्हें कमल के समान मुखवाला मनोहर पुत्र प्रदान करूँगी। उसका नाम 'सुव्रत' होगा। उसमें सभी गुण होंगे और विवेक - शक्ति रहेगी। वह भगवान् नारायण का कलावतार और योगी होगा तथा उसे पूर्व जन्म की बात याद रहेंगी। सभी उसका सम्मान करेंगे। त्रि-लोक में उसकी कीर्ति फैलेगी।

इस प्रकार राजा प्रिय-व्रत से कहकर भगवती देव-सेना ने उन्हें पुत्र-प्राप्ति का वरदान दे दिया। राजा ने भी पूजा करने-करवाने की बात स्वीकार कर ली और प्रसन्न - मन होकर मन्त्रियों के साथ अपने घर लौट आए।

राजा ने सर्वत्र पुत्र-प्राप्ति के लिए माङ्गलिक कार्य आरम्भ करा दिया। **भगवती षष्ठी** की पूजा की। तब से प्रत्येक मास में शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन **भगवती षष्ठी** का महोत्सव मनाया जाने लगा। बालकों के प्रसव-गृह में छठे दिन, इक्कीसवें दिन तथा अन्न-प्राशन के समय पर यत्न - पूर्वक **षष्ठी देवी** की पूजा होने लगी। सर्वत्र इसका प्रचार हो गया। राजा प्रिय-व्रत स्वयं भी पूजा करते थे।

हे सुव्रत ! भगवती देव-सेना—**षष्ठी देवी** का ध्यान, पूजा और स्तोत्र कौथुम-शाखा में कहा गया है। शालग्राम की प्रतिमा,

कलश या वट-वृक्ष के मूल-भाग में या दीवार पर पुत्तलिका बनाकर प्रकृति के छठे अश से प्रकट होनेवाली शुद्ध - स्वरूपा **षष्ठी भगवती** का ध्यान कर पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपचारों से उनका पूजन करे। प्रत्येक उपचार को देने के पहले '**ॐ ह्रीं षष्ठो-देव्यै स्वाहा**' इस मन्त्र का उच्चारण करे। यथा-शक्ति इस अष्टाक्षर मन्त्र का जप भी करे। फिर भक्ति-पूर्वक उनकी स्तुति कर प्रणाम करे।

मन्त्र-जप और इसी प्रकार ध्यान, पूजा, स्तुति कर महाराज प्रिय-व्रत ने **षष्ठी देवी** की कृपा से यशस्वी पुत्र प्राप्त किया। हे ब्रह्मन् ! जो **भगवती षष्ठी** के स्तोत्र को एक वर्ष तक पढ़ता या सुनता है, वह यदि अ-पुत्री है, तो दीर्घ - जीवी एवं सुन्दर पुत्र प्राप्त कर लेता है। अतीव वन्ध्या स्त्री भी **षष्ठी देवी** की कृपा से सन्तान को जन्म देने में समर्थ होती है। काक - वत्सा और मृत-वत्सा नारी भी भगवती **षष्ठी देवी** की कृपा से पुत्र-वती हो जाती है। यदि बालक को कोई रोग हो जाय, तो उसके माता-पिता **षष्ठी देवी** के स्तोत्र को एक महीने तक नियम-पूर्वक पढ़ें। इससे **षष्ठी देवी** की कृपा से उस बालक की व्याधि दूर हो जायगी और वह स्वस्थ तथा दीर्घ-जीवी होगा।

२—पुत्र-प्रद अभिलाषाऽष्टक-स्तोत्रम्

स्कन्द-पुराण के काशी-खण्ड में 'विश्वेश्वर-स्तोत्र' दिया है, जिसका प्रयोग करने से पुत्र-पौत्र-धनादि से साधक सम्पन्न होता है। जैसा कि इस स्तोत्र के अन्त में निर्देश किया गया है, इसका पाठ प्रातः, मध्याह्न, सायं—तीनों काल एक वर्ष तक भगवान् शिव की मूर्ति के समीप बैठकर यदि कोई करे, तो उसे पुत्र-पौत्र-धन का सुख मिलता है और उसकी सभी आपत्तियाँ शान्त होती हैं।

अथवा प्रातः-काल उठकर विधि-वत् स्नान कर शिव-लिङ्ग की पूजा कर एक वर्ष तक इस 'अभिलाषाऽष्टक-स्तोत्र' का पाठ करने से पुत्र-हीन व्यक्ति पुत्र-वान् होता है।

वैशाख, कार्तिक और माघ के महीनों में विशेष नियमों का पालन करते हुए जो स्नान के समय इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसकी सभी कामनाएँ पूरी होती हैं।

इस स्तोत्र का पाठ स्त्री-पुरुष दोनों कर सकते हैं। इसके प्रभाव से वन्ध्या स्त्री के भी पुत्र होता है। स्तोत्र इस प्रकार है—

॥ श्री विश्वेश्वर अभिलाषाऽष्टक-स्तोत्रम ॥

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं, समस्तं सत्यं, सत्यं नेह नानाऽस्ति किञ्चित्। एको रुद्रो, न द्वितीयोऽवस्तस्थे, तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ॥१

एकः कर्त्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो ! नानारूपेष्वेक-रूपोऽस्य रूपः। यद्-वत् तपत्यर्क एकोऽप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ॥२

रज्जौ सर्पः, शुक्तिकायां च रौप्यं, वारां पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ। यद् - वत् तद्-वद् विविष्वगेव प्रपञ्चो यस्मिन् ज्ञाते, तं प्रपद्ये महेशम् ॥३

तोये शैत्यं, दाहकत्वं च वह्नौ, तापो भानौ, शीतभानौ प्रसादः। पुष्पे गन्धो, दुग्ध - मध्ये च सर्पिर्यद्वच्छम्भो ! त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये ॥४

शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रेरघ्राणस्त्वं व्यं-घ्रिरायासि दूरात् । व्यक्षः पश्यस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः, कस्त्वां सम्यग् वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ।।५

नो वेदस्त्वामीश ! साक्षाद्धि वेद, नो वा विष्णुर्नो विधाताऽखिलस्य । नो योगीन्द्रानेन्द्र - मुख्याश्च देवा, भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये ।।६

नो ते गोत्रं, नाऽपि जन्मापि नाख्या, नो वा रूपं, नैव शीलं, न देशः । इत्थं भूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः, सर्वान् कामान् पूरयेस्तद भजे त्वाम् ।।७

त्वत्तः सर्वं, त्वं हि सर्वं, स्मरारे ! त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽति-शान्तः । त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा, त्वं च बाल-स्तत् किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि ।।८

।। फल-श्रुति ।।

स्तुत्वेति भूमौ निपपात विप्रः, स दण्ड-वद् याव-दतीव - हृष्टः । तावत् स बालोऽपि खिल - वृद्धः, प्रोवाच—'भूदेव ! वरं वृणीहि' ।।१

तत उत्थाय हृष्टात्मा, मुनिर्विश्वानरः कृती ।
प्रत्यब्रवीत् किमज्ञातं, सर्वज्ञस्य तव प्रभो ! ।।२
सर्वान्तरात्मा भगवाञ्छर्वः सर्व - प्रदो भवान् ।
याञ्चां प्रति-नियुंक्ते मां, किमीशो दैन्य-कारिणीम् ।।३
इति श्रुत्वा वचस्तस्य, देवो विश्वानरस्य ह !
शुचः शुचि-व्रतस्याथ, शुचि-स्मित्वाऽब्रवीच्छिशुः ।।४

त्वया शुचे शुचिष्मत्या, योऽभिलाषः कृतो हृदि ।
अचिरेणैव कालेन, स भविष्यत्यसंशयः ।।५
तव पुत्रत्वमेष्यामि, शुचिष्मत्यां महा - मते !
ख्यातो गृह-पतिर्नाम्ना, शुचिः सर्वामर - प्रियः ।
अभिलाषाऽष्टकं पुण्यं, स्तोत्रमेतत् मयेरितम् ।।६
अब्दं त्रि-काल-पठनात्, कामदं शिव - सन्निधौ ।
एतत् - स्तोत्रस्य पठनं, पुत्र - पौत्र - धन-प्रदम् ।।७
सर्व-शान्ति - करं वापि, सर्वापत् - परिनाशनम् ।
स्वर्गापवर्ग - सम्पत्ति - कारकं नात्र संशयः ।।८
प्रातरुत्थाय सु-स्नातो, लिङ्गमभ्यर्च्य शाम्भवम् ।
वर्षं जपन्निदं स्तोत्रमपुत्रः पुत्र - वान् भवेत् ।।९
वैशाखे कार्तिके माघे, विशेष - नियमैर्युतः ।
यः पठेत् स्नान-समये, लभते सकलं फलम् ।।१०
कार्तिकस्य तु मासस्य, प्रसादादहमव्ययः ।
तव पुत्रत्वमेष्यामि, यस्त्वन्यस्तत् पठिष्यति ।।११
अभिलाषाऽष्टकमिदं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन, महा - वन्ध्या - प्रसूति-कृत् ।।१२
स्त्रिया वा पुरुषेणापि, नियमाल्लिङ्ग - सन्निधौ ।
अब्दं जप्तमिदं स्तोत्रं, पुत्रदं नात्र संशयः ।।१३
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे बालः, सोऽपि विप्रो गृहं गतः ।।१४

३—द्वादशाक्षर मन्त्र-प्रयोग

भगवान् शङ्कर का बचन है कि आम के किसी मनोरम वृक्ष की डाल पर सुखासीन होकर निम्न मन्त्र का प्रति-दिन एकाग्र मन से यथा-शक्ति जप करे, तो अपुत्र भी पुत्र-वान् होता है —

ॐ हां हीं हूँ पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ।

४—पुत्र-दायक यन्त्र

शङ्कर मातु शङ्कर पितु

करै वरन लक्ष्मी-पति

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

शङ्कर राखैं चारों दीप

पापी के लक्षण

किसी शुभ नक्षत्र-काल में गोरोचन से भोज-पत्र पर उक्त यन्त्र को लिखे । फिर गुग्गुल की धूप से इसे सु-धूपित कर सोने या चाँदी के पत्र में इसे मढ़ा ले । इस यन्त्र को वन्ध्या स्त्री के कण्ठ में बाँधे, तो जिसके पुत्र न होता हो अथवा होकर मर जाता हो, उसके निश्चय ही पुत्र होकर जीवित रहता है ।

५—वसु-प्रद श्रीकृष्ण मन्त्र

विनियोग—ॐ **अस्य श्रीवसु - पुत्रद श्रीकृष्ण - मन्त्रस्य श्रीनारद-ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, वसु - पुत्र-प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।**

ऋष्यादि-न्यास—**श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि । गायत्री-छन्दसे नमः मुखे । श्रीकृष्णाय देवतायै नमः हृदि । वसु-पुत्र-प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।**

कर-न्यास—**क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, क्लूं मध्यमाभ्यां वषट्, क्लैं अनामिकाभ्यां हुं, क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, क्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।**

अङ्ग-न्यास—**क्लां हृदयाय नमः, क्लीं शिरसे स्वाहा, क्लूं शिखायै वषट्, क्लैं कवचाय हुं, क्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, क्लः अस्त्राय फट्।**

ध्यान—

बालं नीलमुदार-कान्ति-विभवं हस्ताम्बुजे दक्षिणे,
बिभ्राणं परिपक्व-दौग्ध-कवलं नन्दात्मजं सुन्दरम्।
वामे तद्-दिन-जातमुद्धत-रसं दध्युत्थ-पिण्डं शुभम्,
वैयाघ्रेण नखेन राजित - गलं त्यक्तांशुकं भावये।।

इस प्रकार ध्यान कर मानसोपचारों से पूजन करे। तदनन्तर एकाग्र होकर निम्न मन्त्र का जप करे। इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप से होता है—

गोपालक-वेष-धराय वासुदेवाय हुँ फट् स्वाहा।

पुरश्चरण के पूर्ण होने पर शर्करा-घृत के हवि से दशांश हवन करे। फिर सरोज (कमल) के मध्य में स्थित भगवान् कृष्ण का पूजन कर उनके मुख में उक्त मन्त्र से गो-दुग्ध, शुद्ध पके हुए केले, दही और मक्खन से भावना द्वारा दशांश तर्पण करे।

इस प्रकार करने से एक वर्ष में ही पुत्र-लाभ होता है।

६--सन्तान-गोपाल मन्त्र

विनियोग--**ॐ अस्य श्रीसन्तान-गोपाल-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्ण देवता। सन्तान-प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास—**श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । श्रीकृष्ण-देवतायै नमः हृदि । सन्तान-प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।**

कर-न्यास—**देवकी-सुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः । वासुदेव जगत्-पते तर्जनीभ्यां स्वाहा । देहि मे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां वषट् । त्वामहं शरणं गतः अनामिकाभ्यां हुं । देवकी-सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ! देहि तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः कनिष्ठिकाभ्यां फट् ।**

अङ्ग-न्यास—**देवकी-सुत गोविन्द हृदयाय नमः । वासुदेव जगत्-पते शिरसे स्वाहा । देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट् । त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुं । देवकी-सुत गोविन्द वासुदेव जगत्-पते ! देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट् ।**

ध्यान—

शङ्ख-चर्म-धरं देवं, श्याम-वर्णं चतुर्भुजम् ।
सर्वाभरण - सन्दीप्तं, पीत - वाससमच्युतम् ।।
मयूर-पिच्छ-संयुक्तं, विष्णुं तेजोप-बृंहितम् ।
समर्पयन्तं विप्राय, नष्टानानीय बालकान् ।।

दो हाथों में शङ्ख-चक्र और शेष दो हाथों में गदा-पद्म का ध्यान करे । यदि इस मन्त्र का प्रयोग कोई महिला (स्त्री) करे, तो उसे निम्न प्रकार ध्यान करना चाहिए—

स्वाङ्के सम्मुख सन्निविष्टममले रक्ताम्बुजे बालकम् ।
माणिक्योज्ज्वल-बाल-भूषण-गणं प्रोत्तप्त-हेम-द्युतिम् ।।
प्रेम्णालिंग्य मुहुर्मुहुः सुख-वशात् संलालितं स्वात्मना ।
पुत्रत्वेन विभावये मुर - रिपुं पुत्रार्थिनी कामिनी ।।

ध्यान करने के बाद मानसोपचारों से पूजन कर निम्न मन्त्र का जप करे –

देवकी-सुत ! गोविन्द ! वासुदेव ! जगत् - पते !
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः ॥

इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप से होता है। निश्चित संख्या में नियत समय पर प्रति-दिन जप करे। पुरश्चरण के पूर्ण होने पर गो-घृत से हवन कर तर्पणादि करे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तदनन्तर पुत्रार्थी साधक शुक्ल पक्ष की दशमी की अर्ध-रात्रि में स्वस्तिक-मण्डल की रचना कर उसमें विराजमान भगवान् कृष्ण की उक्त मन्त्र से पूजा करे। इससे अवश्य ही चिर-जीवी विनीत पुत्र की प्राप्ति होती है।

७--चिर-जीवी पुत्र-प्राप्ति का यन्त्र

क्रूं क्रूं क्रूं दुं दुं दुं दुर्गे, दुर्गे, महा-दुर्गे ! नाशय नाशय, हन हन, पच पच, मथ मथ, बन्ध बन्ध हिंसान्। महा-षष्ठी-रूपेण इमं बालकं रक्ष रक्ष, चिर-जीविनं कुरु कुरु, ह्रीं श्रीं क्रूं दुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को नीचे अंकित **'चौवन मन्त्र'** के साथ भोज-पत्र पर अनार की कलम द्वारा लाल चन्दन से लिखे। फिर उस भोज-पत्र को ताँबे के पत्र में मढ़वा ले अर्थात् ताबीज बनवा ले। इस ताबीज को शुद्ध गुग्गुल की धूप देकर सुगन्धित करे। तदनन्तर ताबीज को काले रेशमी डोरे द्वारा गर्भावस्था के पाँचवें महीने में माता की कमर में बाँध दे—

१५	२०	१६
२२	१८	१४
१७	१६	२१

पुत्र का जन्म होने पर उक्त ताम्र ताबीज को माँ की कमर से खोलकर पुत्र के गले में पहना दे। इससे वह नव-जात पुत्र चिर-जीवी होगा।

८—पुत्रदा श्रावण शुक्ला एकादशी

श्रावण मास के शुक्ल-पक्ष की एकादशी के दिन नियम-पूर्वक व्रत करने से दीर्घ-जीवी और सुन्दर पुत्र की प्राप्ति होती है। व्रत करने के साथ ही निम्न कथा का पाठ करना चाहिए—

धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण से कहा—हे केशव ! आप कृपा करके श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी के माहात्म्य की कथा सुनाइए।

श्रीकृष्ण ने कहा—हे राजन् ! श्रावण शुक्ला एकादशी का व्रत करने से पापों का नाश होकर पुत्र की प्राप्ति होती है। द्वापर-युग के आदि में माहिष्मती नगरी में महा-जित नाम का राजा राज्य करता था, किन्तु वह पुत्र - हीन था, जिससे वह सदा चिन्तित और दुःखी रहता था, एक दिन उसने अपने समस्त मन्त्रियों को एकत्रित कर उनसे अपने इस दुःख की बात कही। मन्त्री राजा के दुःख को दूर करने के लिए वन में लोमश ऋषि के पास गए और मुनि को प्रणाम कर राजा के दुःख की बात कह सुनाई। इस पर लोमश मुनि ने कहा—"आपका राजा

पहले जन्म में कङ्गाल और कुकर्मी था। एक बार वह दो दिन का भूखा-प्यासा एक वन में पहुँचा। वहाँ उसने उस सरोवर में एक हाल की व्याई गाय को हटाकर पानी पिया। हे मन्त्रियों ! उस दिन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का दिन था। उसी के कारण यह राजा पुत्र-हीन हुआ और एकादशी के दिन व्रत रहने के कारण राजा हुआ। अब आप यदि अपने राजा को सन्तान-लाभ कराना चाहते हैं, तो श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की 'पुत्रदा एकादशी' का व्रत विधि-पूर्वक आप सब करें और रात्रि-जागरण करें। उस व्रत के पुण्य का फल अपने राजा को सङ्कल्प कर दें। इसके प्रभाव से राजा को पुत्र उत्पन्न होगा।"

सब मन्त्री राजा को सुखी बनाने के लिए ऋषि को प्रणाम कर वापस आए और पुत्रदा एकादशी का व्रत करके उसका फल राजा को सङ्कल्प करके दे दिया।

परिणाम यह हुआ कि नौ मास के पश्चात् रानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। राजा के समस्त दुःख दूर हो गए।

९—श्री दुर्गा सप्तशती का प्रयोग

सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के आदि और अन्त में काम-बीज **'क्लीं'** को लगाकर ४१ दिन तक पूरी सप्तशती का नित्य तीन बार पाठ करे। ऐसा करने से निश्चित रूप से **'पुत्र'** की प्राप्ति होती है।

१०—बीजात्मक सन्तान-गोपाल मन्त्र

विनियोग—**ॐ अस्य सन्तान-गोपाल-मन्त्रस्य नारायण ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। पुत्र-प्रद-श्री गोपालो देवता। क्लीं बीजं। श्रीं ह्रीं शक्तिः। जीं कीलकं। श्रीसन्तान-गोपाल-प्रसाद-सिद्धि-पूर्वक मम (यजमानस्य वा) चिरायु-पुत्र-प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास—**ॐ नारायण-ऋषये नमः शिरसि । ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । ॐ पुत्र-प्रद-श्रीगोपाल-देवतायै नमः हृदि । ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये । ॐ श्रीं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । ॐ जीं कीलकाय नमः नाभौ । चिरायु-पुत्र-प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।**

कर-न्यास—**ॐ देवकी-सुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देहि मे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां नमः । ॐ त्वामहं शरणं गतः अनामिकाभ्यां नमः । ॐ देवकी-सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।**

अङ्ग-न्यास—**ॐ देवकी-सुत गोविन्द हृदयाय नमः । ॐ वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा । ॐ देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट् । ॐ त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुं । ॐ देवकी-सुत गोविन्द वासुदेव जगत्-पते नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट् ।**

ध्यान—

ॐ वैकुण्ठ-तेजसा दीप्तमर्जुनेन समन्वितम् ।
समर्पयन्तं विप्राय, नष्टानानीय बालकान् ।।

अथवा

विजयेन युतो रथ-स्थितः, प्रसमानीय समुद्र-मध्यतः ।
प्राददत् तनयान् द्वि-जन्मने, स्मरणीयो वसुदेव-नन्दनः ।।

ध्यान कर मानसोपचारों से श्री गोपाल देवता का पूजन कर निम्न ५४ अक्षरवाले मन्त्र का चार लाख जप करे । प्रतिदिन निश्चित समय पर समान संख्या में जप करे । जप-संख्या

पूर्ण होने पर दशांश-क्रम से तर्पण, मार्जन, होम व ब्राह्मण-भोजन कराए।

मन्त्र—**ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ देवकी-सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ! देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ।**

११—पुत्र-दायक मङ्गल-व्रत

पुत्र-प्राप्ति की इच्छावाली स्त्री को **मङ्गल** के दिन व्रत करना चाहिए। मार्गशीर्ष (अगहन) या वैशाख में इस व्रत को आरम्भ करे। **मङ्गल** के दिन सूर्योदय के समय उठकर हाथ-मुँह धो मौन होकर अपा-मार्ग की दातून से दाँत साफ करे। स्नान कर लाल वस्त्र पहने। फिर लाल रङ्ग के गन्ध, पुष्प एवं नैवेद्य लेकर पञ्चोपचारों से **मङ्गल-देव** का पूजन करे। तब निम्न स्तुति का पाठ करे—

धरणी-गर्भ-सम्भूतं, विद्युत्-तेज.-सम-प्रभम्।
कुमारं शक्ति-हस्तं च, मङ्गलं प्रणामाम्यहम् ॥१

ऋण-हर्त्रे नमस्तुभ्यं, दुःख-दारिद्र्य-नाशिने।
नभसि द्योत-मानाय, सर्व-कल्याण-कारिणे ॥२

देव-दानव-गन्धर्व - यक्ष - राक्षस - पन्नगाः।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै, नमो धरणि - सूनवे ॥३

यो वक्र-गतिमापन्नो, नृणां दुःखं प्रयच्छति।
पूजितः सुख-सौभाग्यं, तस्मै क्षमा-सूनवे नमः ॥४

श्रीषष्ठी-देव्यै नमो नमः

श्वेत-चम्पक-वर्णाभां, रत्न-भूषण-भूषिताम् ।
पवित्र - रूपां परमां, देव - सेनां परां भजे ।।